Payback time: IIT-K alumnus institutes Chair, 3 scholarships

RAO JASWANT SINGH
KANPUR, FEBRUARY 8

YET another alumnus of the Indian Institute of Technology, Kanpur (IIT-K), is back here to do something for his alma mater. Kamalesh Dwivedi, who is settled in the US at present, has instituted a professorship Chair and three scholarships for women students of BTech. IIT-K has welcomed the move.

Dwivedi, who was born and brought up in Buxar district of Bihar, is now executive vice-president and chief information officer at TeleTech Holdings, a leading global BPO provider based in Colorado.

Talking about his father on whose name the Chair, Pandit Ramchandra Dwivedi Chair Professorship, has been instituted, Dwivedi said he was a Sanskrit teacher and purohit in the village, just like his grandfather and great grandfather. "We are four brothers and four sisters and my father earned Rs 20 a month," he added.

He said his father was called 'trouble-maker' by the British and was jailed. "The jailor was so impressed by my father's Sanskrit prowess that he offered to release him if he taught Sanskrit to his daughter," he said.

Dwivedi said he completed his basic education in the village, after which he studied in Patna and cracked IIT in 1974. Dwivedi went to Canada for higher education and work, and joined TeleTech 12 years later.

'Pandit Ramchandra Dwivedi Chair Professorship' is the 16th Chair that has come up in the institute within a period of 12 months.

Dwivedi has now undertaken the task of providing free education to the underprivileged children in his native village. "All those who pass out of the village high school are provided full college scholarships upto graduation level and till date 45 such students have benefited from it," he added. He said his target was to produce at least 1,000 graduates from his village, for which he donates around Rs 2.5-3.5 lakh every year.

About his future plans, Dwivedi said he wished to start a trust in his village with Rs 1 crore. He said he was looking for some people whom he can trust to run the trust.

IIT-K director S G Dhande, Kamalesh Dwivedi and his wife, Reeta in Kanpur on Thursday. *Newsline photo*

IIT-K director S G Dhande said the 'Pandit Ramchandra Dwivedi Chair Professorship' is the 16th Chair that has come up in the institute within a period of 12 months. This endowment has been financially sponsored to the extent of $100,000 and is meant to encourage excellence in education by supporting a distinguished faculty member in any department of IIT-K.

Dwivedi's wife, Reeta, said the three scholarships named after their daughters — Swastika Gargi scholarship, Kratika Maitreyi scholarship and Anamika Lilavati scholarship — will award Rs 10,000 annually to three top women students.

IIT-K get overseas support from alumni

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: The concept of instituting academic chairs in the name of alumni has yielded rich dividends for the Indian Institute of Technology IIT). Known as 'Vidya Aasan' (seat of learning), the premier institute has witnessed setting up of as many as 16 such chairs in just 12 months with the help of funding from the alumni. And the trend of funding the alma mater from overseas shows that "individuals hailing from middle class who are well placed today have begun retracing their roots in the country."

The encouraging feature of this funding from alumni was their keenness to develop an everlasting emotional bond with the institution they passed out from with flying colours decades ago.

Talking to newsmen, director IIT-K, SG Dhande, said "the tradition of only well placed families contributing towards academic excellence has been broken. More and more exceptionally well placed individuals hailing from middle income groups have begun funding for super specialists."

He said contributions made by Kamalesh Dwivedi, originally a native of district Buxar in Bihar was one such example. An alumni of IIT-K and son of a freedom fighter Kamalesh Dwivedi, provided funds for creation of a seat of learning in the memory of Pandit Ramchandra Dwivedi.

Director IIT-K SG Dhande talking to newsmen on establishment of a new faculty chair.

The seat was meant to encourage excellence in academic sphere by supporting a faculty in any department of IIT-K which had done research and development in an area related to defence.

Dwivedi also instituted three scholarships in the name of his daughters to promote meritorious girls students graduating B Tech with flying colours.

Contributions received from Kamlesh was not an isolated case when an individual hailing from a middle income group contributed towards the upliftment of academic standards at his alma mater. He joins few others of his ilk who have contributed through gift programme for creating super specialists here and provide them the required support for research and development.

आईआईटी पूर्व छात्र की मदद से तीन छात्राओं को देगा छात्रवृत्ति

सहारा न्यूज ब्यूरो

▶▶ कानपुर, 8 फरवरी।

आईआईटी के पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी ने अपने पिता पंडित रामचन्द्र द्विवेदी के नाम पर संस्थान में 'चेयर प्रोफेसरशिप' शुरू की है। इस चेयर के माध्यम से वह हर वर्ष संस्थान की तीन सर्वश्रेष्ठ छात्राओं को दस-दस हजार रुपए की छात्रवृत्ति देंगे। इसकी शुरुआत आज तीन छात्राओं को छात्रवृत्ति देकर की गई।

इस सम्बंध में आज संस्थान के विजिटर्स हास्टल (अतिथि गृह) में पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी ने पत्रकारों को बताया कि उनके साथ अपनी पत्नी रीता द्विवेदी निदेशक पो. संजय गोविन्द धाण्डे व प्रो. सुधीर कुमार जैन उपस्थित थे। अमरीका की टाप थ्री कम्पनी टेलीटेक में कार्यकारी उपाध्यक्ष व सीआईओ के महत्वपूर्ण पद में काबिज श्री द्विवेदी ने कहा कि अपने देश में बेटियों की उपेक्षा की जाती है। इसलिए उन्होंने छात्राओं को स्कालरशिप देने का निर्णय लिया।

नयी 'चेयर' की शुरुआत छात्रवृत्ति देकर की

ये स्कालरशिप उनकी तीन बेटियों के नाम से घोषित की गई है। जिनके नाम स्वास्थिका, कृतिका व अनामिका है। निदेशक प्रो. धाण्डे ने बताया कि अभी तक पूर्व छात्रों की मदद से 16 चेयर स्थापित हो चुकी हैं। जिनके माध्यम से छात्रों को स्कालरशिप मिलती है। एक सवाल के जवाब में कहा कि संस्थान में ओबीसी के लिए आरक्षण बढ़ने से छात्रों की संख्या बढ़ेगी। इससे पढ़ाई की गुणवत्ता प्रभावित न हो इसके लिए इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने के मद में 10 लाख रुपए व प्रति छात्र 1.7 लाख रुपए संस्थान को मिलेंगे। नयी चेयर शुरू होने पर उन्होंने पूर्व छात्र का आभार व्यक्त कर कहा कि आईआईटी ही एक ऐसा संस्थान है जहां आने वाले मध्यम वर्ग के छात्र आगे चल कर समाज का नेतृत्व करते हैं।

नयी चेयर के शुभारम्भ पर संस्थान की छात्रा अपर्णा सिंह को स्वास्थिका द्विवेदी गार्गी अवार्ड, ऋचा पाण्डेय को अनामिका द्विवेदी लीलावती अवार्ड व अदिति गुप्ता को कृतिका द्विवेदी मैत्रयी अवार्ड दिए गए। इन मेधावी छात्राओं को पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन के लिए दस-दस हजार रुपए दिए गए। इस मौके पर चेयर पर्सन शोभा मदान आदि उपस्थित थे।

आईआईटी में पूर्व छात्रों के सहयोग से 16 'विद्या आसन'

पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी और उनकी पत्नी रीता।

कानपुर, 8 फरवरी। आई.आई.टी. के पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी ने अपने पिता पं. राम चन्द्र द्विवेदी के नाम पर भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान में एक 'विद्या आसन' बनाया। इसको स्थापित करने में एक लाख अमेरिकन डालर उन्होंने संस्थान को दान किये। यह बात पत्रकार वार्ता में आई.आई.टी. के निदेशक संजय गोविन्द धांडे ने कही। उन्होंने कहा कि द्विवेदी जी को शामिल करते हुये अब तक संस्थान में पूर्व छात्रों के सहयोग से १६ विद्या आसन बनाये जा चुके हैं। अमेरिका से आये आई.आई.टी. के पूर्व छात्र टेरीटेक कार्यकारी उपाध्यक्ष कमलेश द्विवेदी ने वार्ता में कहा कि मैं बिहार के बक्सर जिले से २० मील दूर केसठ गांव के निवासी और संस्कृत के पुरोहित पं.राम चन्द्र द्विवेदी का पुत्र हूं। विद्या का दान सबसे बड़ा दान होता है। इस एवज में मैं अपने गांव में एक करोड़ से ट्रस्ट बनाऊंगा जो बच्चों को कालेज में पढ़ने के लिये मदद करेगी। वर्तमान में गांव के ४५ बच्चों की पढ़ाई में २.५ लाख रुपये हम लोग खर्च कर रहे है। उनकी पत्नी रीता द्विवेदी ने बताया कि अपनी पुत्रियों को भारत से जोड़ने के लिये आई.आई.टी. की तीन टॉपर छात्राओं को हम लोग दस-दस हजार रुपये का एवार्ड देंगे। आई.आई.टी. के चालू सत्र में स्वाष्तिका द्विवेदी गार्गी एवार्ड अपर्णा सिंह को, कृतिका द्विवेदी मैत्रेय एवार्ड अदिति गुप्ता और अनामिका द्विवेदी लीलावती एवार्ड रिचा पाण्डेय को दिया गया है। पत्रकार वार्ता में डा. सुधीर कुमार जैन आदि थे।

आईआईटी में पत्रकार वार्ता करते बाएं से निदेशक प्रो.एस.जी धाण्डे, पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी, मिसेज द्विवेदी तथा प्रो सुधीर जैन

फोटो : एसएनबी

आईआईटी पूर्व छात्र ने शुरू की छात्रवृत्तियां

कानपुर। आईआईटी के पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी ने आईआईटी में तीन छात्रवृत्तियां शुरू की। राष्ट्रनिर्माण की भावना के तहत वह बिहार में गरीब छात्रों को स्कालरशिप प्रदान कर पढ़ा रहे हैं।

आईआईटी के पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी कोलेराडों की अंतरराष्ट्रीय बीपीओ कंपनी टेली टेक के वाइस प्रेसिडेंट और सीईओ हैं। राष्ट्रनिर्माण की भावना को लेकर बिहार के बक्सर जिले के एक छोटे से गांव केसट से निकले कमलेश द्विवेदी में आज भी देश के लिए कुछ करने का जज्बा है। आईआईटी में 28 साल बाद लौटे कमलेश ने आईआईटी को 5 महीने पूर्व विद्या आसन बनाने के लिए धन दिया था। इनके द्वारा दिए धन से निर्मित विद्या आसन को मिला कर आईआईटी में 16 विद्या आसन बन चुके हैं। धर्म पत्नी रीता द्विवेदी के साथ आईआईटी आए कमलेश द्विवेदी ने आज एक वार्ता में बताया कि आईआईटी की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली तीन मेधावी छात्राओं के लिए 10,000 रुपये प्रति वर्ष की छात्रवृत्ति शुरू की है। इन छात्रवृत्तियों का नाम उन्होंने अपनी तीनों लड़कियों स्वस्तिका, कृतिका, अनामिका और अपने क्षेत्र में विख्यात महिलाओं के संयुक्त नाम पर रखा है। सत्र 2007 का स्वस्तिका द्विवेदी गार्गी अवार्ड अपर्णा सिंह, कृतिका द्विवेदी मैत्रेय अवार्ड अद्वितीय गुप्ता और अनामिका द्विवेदी लीलावती अवार्ड रिचा पांडे को मिला।

अट्ठाइस साल बाद भी नहीं भूला वतन व गांव

सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर, 8 फरवरी।

अमरीका में बसने के बाद भी आईआईटी के पूर्व छात्र कमलेश द्विवेदी अपने वतन को नहीं भूले। खास कर अपने संस्थान आईआईटी व गांव केसठ (बिहार) जहां से हाई स्कूल किया। अट्ठाइस साल बाद आज जब वह अपने संस्थान पहुंचे तो नए हाईटेक भवन देख भौचक रह गए। वहीं पुरानी यादें ताजा हो गईं।

आईआईटी में नयी छात्रवृत्ति स्कीम की शुरुआत करने वाले पूर्व छात्र ने पत्रकारों के समक्ष अपने बीते दिन याद किए। केसठ से अमरीका तक के सफर की कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि उनके पूर्वज बलिया से सन् 1635 में बिहार के गांव केसठ जिला बक्सर में आकर बसे थे। स्वतंत्रता सेनानी व पुरोहित पिता पंडित रामचंद्र द्विवेदी संस्कृत के विद्वान थे। मध्यम वर्ग से ताल्लुक रखने वाले पिता ने अपने चार बेटों व चार बेटियों की अच्छे संस्कार व पढ़ाई-लिखाई में कोई कसर नहीं छोड़ी। यह अच्छी परवरिस का परिणाम है कि दो बेटे इंजीनियर एक डाक्टर व एक बायोलाजिस्ट बन कर पिता का नाम रोशन कर रहे हैं। स्वतंत्रता सेनानी होने से जुड़ा पिता का एक वाक्या बताया कि सन् 1942 में अंग्रेजों ने उन्हें बक्सर जेल में बंद कर दिया। ब्रिटिश जेलर ने शर्त रखी कि मेरी बेटी को संस्कृत पढ़ाओ तब छोड़ेंगे। बाद में ऐसा ही हुआ।

श्री द्विवेदी ने बताया कि उन्होंने गांव से ही हाईस्कूल किया और बिहार में 7वीं पोजीशन हासिल की। इसके बाद साइंस कालेज पटना विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। इंटरमीडिएट की पढ़ाई के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव एलएलबी कर रहे थे।

लालू प्रसाद उस वक्त जयप्रकाश आंदोलन में सक्रिय थे। आंदोलन के कारण जब लम्बे समय तक कालेज बंद हो गए तो कमलेश द्विवेदी ने साल खराब होता देख आईआईटी कानपुर को पत्र लिखकर प्रवेश फार्म मांगा। सन् 74 में उन्होंने आईआईटी में प्रवेश किया। यहां पांच साल इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। इसके बाद कनाडा स्कालरशिप पर चले गए। वह कहते हैं कि उनकी इच्छा फिजिक्स विषय से पीएचडी करने की थी, मगर आंदोलन ने आईआईटी पहुंचा दिया।

अमरीका में बसने के बावजूद वह अपने गांव को नहीं भूले। वह गांव केसठ में छात्रवृत्ति प्रोग्राम चला रहे हैं। गांव के 45 छात्र उनकी मदद से कालेज में पढ़ रहे हैं। उनका लक्ष्य 1 हजार बच्चों को शिक्षा दिलाना है। इस कार्य के लिए वह गांव में ट्रस्ट खोलकर एक करोड़ रुपया जमा करेंगे। उसके ब्याज से छात्रवृत्ति दी जाएगी।